

संघर्ष जीवन का हिस्सा है

ममता ढुंगरी^ॐ

यह सामान्य सी बात है कि लोग जीवन में किसी मनुष्य का संघर्ष न देखकर उसकी सफलता को देखते हैं अर्थात् उसकी कामयाबी को और शायद इसलिए मनुष्य हर मुश्किल का सामना करते हुए अपनी मंजिल तक पहुँचने की पूरी कोशिश में लगा रहता है। लेकिन फिर भी कभी-कभी परिस्थितियाँ संघर्षों के अनुकूल नहीं हो पाती और कई बार असफल भी होना पड़ता है। असफलता मन में निराशा बन कर बैठ जाती है, जिसके कारण मन में हलचल मची होती है। एक ऐसी हलचल जो मनुष्य की बुद्धि और धैर्य का नाश कर उसे गलत-गलत विचार करने पर मजबूर करती है और मनुष्य चल पड़ता है... मृत्यु समान अवसाद की राह पर। लेकिन कुछ मनुष्य बड़े बुद्धिवान और धैर्य धारण करने वाले होते हैं। असफल होने पर भी अपना विश्वास बनाए रखते हैं और खुद के साथ-साथ अपने परिवार को सम्भालते हुए मंजिल तक पहुँचने का दूसरा उपाय सोचते हैं। ये सम्भव भी तो नहीं कि मनुष्य जो चाहे, उसे वही मिल ही जाए। क्या पता उसे उससे भी बेहतर मिलेगा। इसलिए यह सोच मनुष्य को अवश्य रखनी चाहिए कि वो जो चाहता हो और उसे वह न मिले तो अत्यधिक निराशा होने की जगह यह सोच कर धैर्य धारण करे कि उन्हें उससे भी बेहतर मिलेगा।

इस प्रकार ज्यादा दुःखी होने के स्थान पर पूरे सच्चे मन से अपना कर्म करने में आसानी होगी और जिन्दगी का संघर्ष भरा सफर भी आसान लगने लगेगा। जरा गौर से सोचिए। एक माँ जब अपने बच्चे के लिए स्वेटर बुनती है, तो उसकी बुनावट में भी कमी आ ही जाती है। कभी एक फंदा छूट जाता है, कभी स्वेटर में बने डिजाइन सही से नहीं बैठ पाते और तो और कभी-कभी स्वेटर की नाप भी छोटी-बड़ी हो जाती है। फिर भी माँ स्वेटर बुनना नहीं छोड़ती है और अंत में निरन्तर प्रयास से एक सुंदर सा स्वेटर तैयार कर ही लेती है। ठीक इसी तरह मनुष्य के छोटे-बड़े सपने और मुकाम होते हैं, जो कभी तो थोड़ी मेहनत से ही पूरे हो जाते हैं और कभी-कभी जी जान लगाकर मेहनत करने पर भी पूरे नहीं होते। क्योंकि उस मुकाम के रास्ते कठिन होते हैं, जो कि निरन्तर संघर्ष एवं प्रयास से सफलीभूत होते हैं।

यह बात भी सत्य है कि कभी-कभी सारे सपने पूरे नहीं होते पर कुछ सपने ऐसे होते हैं जिन्हें मनुष्य जी जान लगाकर पूरा करता है और वो सपने पूरे भी होते हैं। परन्तु यदि कभी-कभी किसी छोटी सी वजह से कोई अहम सपना पूरा नहीं हो पाता है, तो उसके कारण मानव को पूरी जिन्दगी से मुँह नहीं मोड़ना चाहिए और प्रयास करते रहना चाहिए। नहीं तो एक ऐसे सपने को पूर्ण करते हुए आगे बढ़ना चाहिए जिसका जुड़ाव पहले वाले सपने से हो, राहें अनेक होती हैं। अतः मनुष्य को निराशा होने के बजाय एक कदम आगे बढ़ने की जरूरत होती है, क्योंकि कोई भी मंजिल मनुष्य के जीवन के संघर्षों का ही हिस्सा होती है, वो उसकी पूरी जिन्दगी नहीं होती।

* छात्रा, एम.ए., एनसीडब्ल्यूईबी, दिल्ली विश्वविद्यालय